इकाई 9 दक्खनी राज्य और मुगल

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

इस इकाई में दक्खन राज्यों और मुगलों के संबंधों पर विचार-विमर्श किया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- विभिन्न मुगल बादशाहों की दक्खन राज्यों के प्रति नीति का उल्लेख कर सकेंगे,
- मुगलों की दक्खन नीति को निर्देशित करने वाले कारकों को रेखांकित कर सकेंगे, और
- मुगलों और दक्खन राज्यों के बीच के संघर्ष के परिणाम पर प्रकाश डाल सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

इस खंड की इकाई 8 में आपने दक्खन में अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा, बरार और बीदर में स्वतंत्र सल्तनतों की स्थापना का विवरण पढ़ा। इकाई 8 में हम इन राज्यों के आपसी संबंध और इनकी गतिविधियों की चर्चा भी कर चुके हैं। यहां हम दक्खन राज्यों के साथ मुगलों के संबंधों पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे। मुगलों की दक्खन नीति किसी एक कारक से निर्धारित व निर्देशित नहीं हुई थी। दक्खनी राज्यों के सामरिक महत्व और मुगल साम्राज्य की प्रशासनिक और आर्थिक जरूरतों से ही ज्यादातर दक्खनी राज्यों के प्रति मुगल बादशाहों की नीति निर्धारित होती थी।

प्रथम मुगल शासक बाबर उत्तर में व्यस्त रहने के कारण दक्खन से कोई संपर्क स्थापित नहीं कर सका। फिर भी, 1528 में चंदेरी पर विजय प्राप्त कर उसने मुगल साम्राज्य को मालवा की उत्तरी सीमा के नजदीक पहुंचा दिया। बुरहान निजाम शाह प्रथम के लगातार आग्रह के बावजूद हुमायूं दक्खनी मामले में दखलअंदाजी नहीं कर सका। गुजरात, बिहार और बंगाल की परिस्थितियों में वह इस कदर उलझ गया कि उसे दक्खन की ओर झांकने का मौका ही नहीं मिला। इस प्रकार अकबर पहला मुगल शासक था जिसने दक्खनी राज्यों पर मुगल प्रभुसत्ता की स्थापना की बात सोची।

9.2 अकबर और दक्खनी राज्य

अकबर चाहता था कि दक्खनी शासक उसकी प्रभुसत्ता स्वीकार कर लें। 1572-73 में गुजरात के अभियान के दौरान, उत्तर को पूरी तरह सुरक्षित कर लेने के बाद अकबर ने दक्खन के राज्यों पर आधिपत्य जमाने का निश्चय किया क्योंकि गुजरात से भगाए गए विद्रोही खानदेश, अहमदनगर और बीजापुर में शरण ले लिया करते थे। गुजरात पर आधिपत्य स्थापित करने के बाद अकबर की निगाह दक्खनी राज्यों पर गयी। अकबर चाहता था कि जिस प्रकार गुजरात के शासक दक्खनी राज्यों को अपने अधीनस्थ रखते थे, उसी प्रकार वह भी इन राज्यों को अपने अधीन कर ले। 1417 तक दक्खन के राज्यों ने गुजरात के सुल्तानों की सर्वोच्चिता स्वीकार की थी, उनके नाम का खुतबा पढ़ा था और उन्हें नजराना पेश किया था। दक्खनी राज्यों के आपसी संघर्ष ने भी मुगल बादशाह को उनके मामले में दखल देने के लिए प्रेरित किया। अकबर गुजरात के बंदरगाहों को जाने वाले रास्तों को अपने कब्जे में लेना चाहता था। उसकी इस इच्छा ने भी उसकी दक्खनी नीति को काफी प्रभावित किया। इसके अलावा भारत के पश्चिमी तट पर पुर्तगालियों ने अपने पैर अच्छी तरह जमा लिये थे और उनकी शक्ति को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था। इन पुर्तगालियों को भारत के पश्चिमी तट से भगाने के लिए भी अकबर दक्खन के राज्यों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता था।

दखनी राज्यों के साथ अकबर का पहला संबंध मालवा को जीतने के बाद 1561 में स्थापित हुआ जब उसने अपने मालवा राज्याध्यक्ष (गवर्नर) पीर मुहम्मद को असीरगढ़ और बुरहानपुर का दमन करने के लिए भेजा। मालवा के पूर्व शासक बाज बहादुर ने यहां शरण ले रखी थी। बीजागढ़ पर कब्जा जमाने के बाद पीर मुहम्मद असीरगढ़ की ओर बढ़ा जहां खानदेश का राजा मीरान मुबारक शाह द्वितीय और मालवा का बाज बहादुर मुगलों से टक्कर लेने की तैयारी कर रहे थे। मुबारक शाह की प्रार्थना पर बरार के तूफाल खां ने भी उनका साथ देना स्वीकार कर लिया। इन तीनों ने मिलकर बीजागढ़ में पीर मुहम्मद के नेतृत्व वाली मुगल सेना को परास्त कर दिया। स्थिति पर काबू पाने के लिए अकबर खुद मांडू की ओर बढ़ा। इससे मीरान मुबारक शाह डर गया और उसने अपना दूत अकबर के पास भेजा। उसने अपनी करतूत के लिए माफी मांगी। उसने अकबर से अपनी एक बेटी की शादी की, अकबर की प्रभुसत्ता स्वीकार की, उसके नाम का खुतबा पढ़ा और अपनी बेटी को दहेजस्वरूप बीजागढ़ और हांडिया प्रदान किया।

1562 में अकबर ने मालवा पर कब्जा जमा लिया। इसके बाद दस वर्षों तक वह दक्खन के संघर्ष को ध्यानपूर्वक परखता रहा। 1574 में, मुरतजा निजाम शाह प्रथम ने बरार पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। तूफाल खां बुरहानपुर भाग गया और उसने अकबर की मदद मांगी। उसने बरार अकबर के हवाले करने की पेशकश की और आग्रह किया कि वह अपना प्रशासक वहां भेज दे। पर मीरान मुबारक शाह मुरतजा निजाम शाह प्रथम को नाराज नहीं करना चाहता था। अतः वह यह नहीं चाहता था कि तूफैल खां ज्यादा समय तक बुरहानपुर में टिके। तूफैल बरार भाग गया। अकबर ने अपना दूत मुरतजा के पास भेजा और उसे बरार पर कब्जा जमाने से मना किया पर उसके संदेश पर मुरतजा ने कोई ध्यान नहीं दिया और बरार को अपने कब्जे में ले लिया।

1586 में मुरतजा का छोटा भाई बुरहान भागकर अकबर के दरबार में गया और गद्दी प्राप्त करने में अकबर की सहायता मांगी, बदले में उसने अकबर की प्रभुसत्ता स्वीकार करने का वचन दिया। अकबर ने मालवा के राज्याध्यक्ष मिर्जा अजीज कोका और राजा अली खां को बुरहान की मदद करने का आदेश दिया। बरार की सीमा पर पहुंचने के बाद बुरहान ने अजीज कोका को वही रूकने का परामर्श दिया। उसने तर्क दिया कि इतनी बड़ी सेना देखकर दक्खनी उसके खिलाफ भड़क उठेंगे। अजीज कोका ने उसका निवेदन स्वीकार कर लिया। बुरहान ने 1591 में गद्दी पर कब्जा जमा लिया। उसने मुगलों की प्रत्यक्ष सहायता के बिना ही गद्दी हथिया ली, अतः उसने अकबर की प्रभुसत्ता मानने से इंकार कर दिया।

1591 में अकबर ने दक्खन के चारों शासकों के पास चार राजनयिक दल भेजे। इसके द्वारा उसने वहां की वास्तविक स्थिति भांपनी चाही और यह जानना चाहा कि ये राज्य उसकी अधीनता स्वीकार करने के लिए तैयार हैं या नहीं। केवल राजा अली खां ने अकबर की सर्वोच्चता स्वीकार की और युवराज सलीम के लिए बतौर उपहार अपनी बेटी विवाह के लिए पेश की। अन्य राजाओं का रवैया अनुकूल नहीं था। लगभग सभी दस्तावेजों से पता चलता है कि इस राजनयिक दौर की असफलता के बाद अकबर ने सैन्य आक्रमण करने का निश्चय कर लिया था।

1595 में बुरहान निजाम शाह के बाद उसका बड़ा बेटा इब्राहिम गद्दी पर बैठा पर इसी वर्ष बीजापुर के खिलाफ लड़ता हुआ वह मारा गया। उसकी मृत्यु के बाद अहमदनगर राज्य में अव्यवस्था फैल गयी। यहां चार दल अपने उम्मीदवारों को निजाम शाही गद्दी पर बैठाना चाहते थे। दरबार में दक्खनी दल के नेता और इब्राहिम निजाम शाह के पेशवा मियां मंझू ने एक संदिग्ध स्थित वाले अहमद को नया राजा घोषित कर दिया। अबीसीनियाई दल के नेता इखलास खां ने मोती शाह को निजाम शाही परिवार के सदस्य के रूप में खड़ा किया और उसे नया निजाम घोषित किया। बुरहान द्वितीय की बहन चांद बीबी ने इब्राहिम निजाम शाह के शिशु पुत्र बहादुर का पक्ष लिया। अबीसीनियाई दल के अन्य नेता अभंग खां हब्सी ने बुरहान निजाम शाह प्रथम के बेटे अली का समर्थन किया।

इखलास खां ने बड़ी सेना इकट्ठी कर ली और मियां मंझू को अहमदनगर के किले में शरण लेने के लिए बाध्य कर दिया। मंझू ने गुजरात के राज्याध्यक्ष युवराज मुराद से मदद मांगी। खानदेश से संचालन अच्छे तरीके से संभाला जा सकता था, अतः मुगलों ने वहां के राजा अली खां को गुजरात में नंदुरबार देकर अपने पक्ष में कर लिया। इसके अलावा खानदेश के निकट मुगल सेना की उपस्थिति ने भी उसे ऐसा करने को बाध्य किया। मुगलों ने 1595 में अहमदनगर किले पर घेरा डाल दिया। बाद में मियां मंझू को युवराज मुराद को बुलाने का पछतावा हुआ और वह बीजापुर और गोलकुंडा से मदद प्राप्त करने के लिए औसा चला गया। उसकी अनुपस्थिति में चांद बीबी ने अहमदनगर के किले की प्रतिरक्षा का भार अपने हाथों में ले लिया। बहादुर को नया राजा घोषित किया और उसके नाम का खुतबा पढ़वाया।

इखलास खां और अभंग खां ने चांद बीबी की मदद करने की कोशिश की पर मुगलों ने उन्हें हरा दिया और वे बीजापुर भाग गये। पर मुगल सेनापतियों के आपसी तालमेल के अभाव में घेराबंदी काफी दिनों तक चलती रही। एक तरफ बीजापुर ने अहमदनगर की सहायता के लिए सेना भेज दी और दूसरी तरफ मुगल सेना इस घेराबंदी से अब थक चुकी थी, अतः वे समझौता करने का प्रयास करने लगे। चांद बीबी और मुगलों के बीच एक संधि हुई। इसके तहत बरार पर मुगलों का कब्जा रहा, बहादुर को नये निजाम शाह के रूप में मान्यता मिली और उसे मुगल शासक के मातहत के रूप में मान्यता दी गई। पर इस संधि से शांति स्थापित न हो सकी और मुगल अहमदनगर पर आक्रमण करते रहे। अंततः 1600 में चांद बीबी ने इस किले को समर्पित करने का फैसला किया और बहादुर के साथ जुन्नार में शांति का जीवन बिताने लगी।

खानदेश का बहादुरशाह मुगलों से बहुत खुश नहीं था। 1600 में अकबर बुरहानपुर पहुंचा, उसकी आगवानी करने के बजाय बहादुर असीरगढ़ चला गया। अकबर ने अब्बुल फजल को बहादुर से संपर्क स्थापित करने और अपने व्यवहार

के लिए माफी मांगने के लिए उपस्थित होने का आदेश दिया। पर अब्बुल फजल इसमें कामयाब न हो सका। अकबर ने किले को घेर लिया और 1601 में इस पर कब्जा जमा लिया। बहादुर ने अकबर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और खानदेश एक मुगल प्रांत बन गया।

अहमदनगर और असीरगढ़ के पतन से अन्य दक्खनी शासक डर गये। बीजापुर, गोलकुंडा और बीदर के शासकों ने अकबर के पास अपने-अपने दूत भेजे, जिनका उसने भरपूर स्वागत किया। अकबर ने अपने दूत भी उनके पास भेजे। अकबर ने अपने एक विश्वस्त व्यक्ति खान खाना को दक्खनी मामलों की देखरेख का भार सौंपा। 1601 में अकबर के दक्खन से आगरा की ओर कूच करते ही निजामशाही सरदार मलिक अम्बर के आसपास जमा होने लगे। अहमदनगर के पतन के बाद मलिक अम्बर ने बुरहान निजाम शाह प्रथम के पोते मुरतजा को गद्दी पर बैठाया और खुद उसका पेशवा बन गया उसने खिरकी को अपने राज्य की राजधानी बनाया और मुगल सेना पर गुरिल्ला ढंग से आक्रमण करने लगा। मलिक अम्बर और राजू दक्खनी की चुनौती, मुगल सरदारों की आपसी दुश्मनी तथा उत्तर भारत की स्थिति को देखते हुए अकबर ने दक्खन में मुगल सत्ता को मजबूत बनाने के लिए सैन्य शक्ति की अपेक्षा कूटनीतिक चालों का अधिक सहारा लेने का निश्चय किया।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित वक्तव्यों को पढ़िए और सही (√) या गलत (×) का निशान लगाइए।
   i) अकबर दक्खनी राज्यों पर मुगल सत्ता स्थापित करने वाला पहला मुगल शासक था।
   ii) अहमदनगर के आंतरिक कलह के कारण मुगलों को हस्तक्षेप करने का मौका मिला।
   iii) अकबर अहमदनगर किले पर नियंत्रण स्थापित करने में असफल रहा।
   iv) अपने धार्मिक आग्रह के कारण अकबर दक्खन राज्यों पर मुगल प्रभुसत्ता स्थापित करना चाहता था।

2) अकबर दक्खन में हस्तक्षेप करने को क्यों प्रेरित हुआ? (पांच पंक्तियों में उत्तर दीजिए)।

....

....

....

....

....

....

9.3 जहांगीर और दक्खनी राज्य

जहांगीर ने भी दक्खन में अकबर की विस्तारवादी नीति का अनुसरण करने का प्रयास किया। पर निम्नलिखित कारणों से दक्खन में अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में वह असफल रहा,

- वह अपने को पूरी तरह इस कार्य के प्रति समर्पित नहीं कर सका,
- मुगल कुलीनों के दरबारी षडयंत्र और वैमनस्य को दक्खन में मूर्त रूप लेने का मौका मिला,
- मलिक अम्बर के श्रेष्ठ नेतृत्व के कारण भी जहांगीर अपने उद्देश्यों में सफल न हो सका।

पहले तीन वर्षों में दक्खनियों ने बालघाट के आधे हिस्से और अहमदनगर के कई जिलों पर अधिकार जमा लिया। 1608 में अबदुर्रहीम खान खाना को दक्खन भेजा गया पर उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा और दक्खनियों ने संपूर्ण बालघाट और कई साम्राज्यी चौकियों पर कब्जा कर लिया। 1610 में जहांगीर ने युवराज परवेज को नेतृत्व का भार सौंपा पर मुगल कोई सफलता हासिल करने के बजाय अहमदनगर के किले और अहमदनगर के आधे से अधिक हिस्से को खो बैठे। निजामशाहियों से घूस लेने का आरोप लगने के बाद आसफ खां ने जहांगीर से स्वयं नेतृत्व संभालने का आग्रह किया। जहांगीर को यह विचार अच्छा लगा परन्तु खान जहां लोदी की सलाह पर उसने उसे दक्खन जाने का आदेश दिया। खानखाना और खान जहां लोदी की आपसी दुश्मनी के कारण खान जहां लोदी के आग्रह पर खानखाना को राजशाही दरबार में बुला लिया गया।

मेवाड़ अभियान की सफलता ने जहांगीर को सम्बल प्रदान किया और वह दक्खन के मामलों में पड़ने के लिए अपेक्षाकृत स्वतंत्र हो गया। पर दक्खन में मुगलों के विस्तार का उसका हर प्रयास बुरी तरह विफल रहा। 1612 में एक बार फिर खानखाना को दक्खन भेजा गया। इस समय तक खानखाना के प्रतिद्वंद्वी या तो मर चुके थे या दक्खन से उनका स्थानांतरण कर दिया गया था। दूसरी तरफ मलिक अम्बर के दल में कई गुट हो गये थे। खानखाना ने इस परिस्थिति का फायदा

उठाया और कई दक्खनी और मराठा सरदारों को अपनी ओर मिला लिया। मलिक अम्बर के आग्रह पर बीजापुर और गोलकुंडा के शासकों ने उसकी मदद के लिए सेना भेजी। पर मलिक अम्बर बुरी तरह पराजित हुआ, मुगल खिरकी तक पहुंच गये और 1616 में इसे जला दिया।

मुगलों की यह विजय दिखावटी ही नहीं बल्कि अल्पजीवी भी सिद्ध हुई। मुगल किसी क्षेत्र पर भी कब्जा नहीं जमा सके। दूसरी तरफ मलिक अम्बर ने पुनः अपनी स्थिति मजबूत की और खिरकी पर पुनः कब्जा कर लिया। जहांगीर ने दक्खन से युवराज परवेज को वापस बुला लिया और 1616 में वहां खुर्रम को नियुक्त किया। स्थिति पर नजदीक से नजर रखने के लिए बादशाह खुद अजमेर से मांडू आ गया। खुर्रम ने अपना दूत बीजापुर और गोलकुंडा शासकों के पास भेजा, जिसका उन्होंने स्वागत किया। निजामशाह ने बीजापुर क्षेत्र पर कब्जा करने का प्रयास किया था, इस कारण से निजामशाह और बीजापुर के संबंधों में तनाव आ गया था। कुतुबशाह मुगलों का विरोध करने की ताकत नहीं रखता था। निजामशाह की शक्ति भी काफी खर्च हो चुकी थी और वे शत्रु का सामना करने में समर्थ नहीं था।

आदिल शाह ने खुर्रम को आश्वासन दिया कि वह मुगल साम्राज्य के क्षेत्रों को लौटा देगा और नजराना दिया करेगा। उसने मलिक अम्बर के पास अपना दूत भेजा और उसे साम्राज्य की शर्तें मानने के लिए मजबूर किया। मलिक अम्बर ने बालघाट समर्पित कर दिया और मुगलों को अहमदनगर का किला सौंप दिया। खुर्रम आदिलशाह से काफी खुश था। उसके अनुमोदन पर जहांगीर ने आदिलशाह को फरजंद (बेटा) की उपाधि से सम्मानित किया। दक्खन में प्रशासनिक व्यवस्था करने के बाद खुर्रम 1617 में मांडू गया। वहां बादशाह ने खुर्रम का ओहदा 20,000 **ज़ात** और 10,000 **सवार** से बढ़ाकर 30,000 **ज़ात** और 20,000 **सवार** कर दिया और उसे शाहजहां की उपाधि प्रदान की। जहांगीर ने खुर्रम की सफलता की भरपूर प्रशंसा की। पर खुर्रम की इस प्रशंसा और मुगल दरबार की खुशी अर्थहीन थी। खुर्रम ने दक्खन में मुगल साम्राज्य को न तो बढ़ाया था और न ही दक्खन में स्थाई शांति के लिए कोई व्यवस्था की थी। उसने केवल अस्थाई तौर पर मुगलों की स्थिति मजबूत की थी।

मलिक अम्बर जहांगीर से श्रेष्ठ कूटनीतिज्ञ था। उसने इस समय का उपयोग अपनी शक्ति मजबूत करने के लिए किया। यह शांति केवल तीन वर्षों तक कायम रह सकी। इस काल के दौरान आदिल शाह और कुतुब शाह के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए गये, उनसे सहायता की मांग की और एक गठबंधन तैयार किया।

जहांगीर और शाहजहां 1619 में कश्मीर गये और वहां कांगड़ा पर आक्रमण करने में व्यस्त हो गये। मलिक अम्बर ने इस अवसर का उपयोग किया और खानदेश, बरार तथा अहमदनगर के अधिकांश हिस्सों पर कब्जा जमा लिया और यहां तक कि मांडू पर घेरा डाल दिया। जहांगीर ने 1620 में शाहजहां को फिर से दक्खन भेजा। शाहजहां ने मलिक अम्बर को कई मौकों पर हराया और खिरकी को नष्ट कर दिया। मलिक अम्बर ने संधि की पेशकश की, जिसे शाहजहां ने स्वीकार कर लिया। एक संधि-पत्र पर हस्ताक्षर हुए जिसके अनुसार 1618 के बाद कब्जे में लिए गये सारे साम्राज्यी इलाके के अलावा चौदह कोस का क्षेत्र मुगलों को सौंपना था, कुतुब शाह, आदिल शाह और निजाम शाह को क्रमशः 20, 18 और 12 लाख रुपये बतौर युद्ध हरजाना देना था।

जब मुगल सरदार महाबत खां को दक्खन में शाहजहां के विद्रोह को दबाने के लिए भेजा गया तो उसने मलिक अम्बर के खिलाफ आदिल शाह से संधि कर ली पर मलिक अम्बर ने इस गठबंधन को 1625 में भाटवादी में हरा दिया। अब मलिक अम्बर ने अहमदनगर पर कब्जा जमाने का प्रयत्न किया, पर यहां असफल होकर उसने आदिल शाह से शोलापुर छीन लिया और शाहजहां की सहायता से बुरहानपुर पर कब्ज़ा जमाना चाहा पर इसमें सफलता नहीं मिली। जहांगीर के समक्ष शाहजहां के आत्मसमर्पण के बाद मलिक अम्बर ने भी दुश्मनी का रवैया छोड़ दिया। वह 1626 में मर गया और उसके पुत्र फतह खान को राज्य का वकील और पेशवा नियुक्त किया गया। पर उसकी उदण्डता के कारण दक्खनियों और हब्शियों के बीच की खाई चौड़ी हो गई। इसके परिणामस्वरूप उसके कई सरदारों ने मुगल सेवा स्वीकार कर ली।

जहांगीर के शासन काल में मुगल साम्राज्य के दक्खन क्षेत्र में कोई बढ़ोत्तरी नहीं हुई। मुगल दरबार की राजनीति, दक्खन में सेवरत मुगल सरदारों के आपसी मनमुटाव और उनके द्वारा दक्खनी शासकों से घूस लिए जाने के कारण दक्खनी राज्यों में मुगलों की सत्ता कमजोर हो गयी। जहां तक दक्खनी राज्यों का सवाल है, मलिक अम्बर की अति महत्वाकांक्षा ने दक्खन राज्यों को संगठित नहीं होने दिया।

9.4 शाहजहां और दक्खनी राज्य

जहांगीर की मृत्यु और शाहजहां के गद्दी पर बैठने के बीच के काल में दक्खन के मुगल राज्याध्यक्ष खान जहां लोदी ने निजाम शाह से जरूरत के वक्त सहायता प्राप्त करने के ध्येय से बालघाट निजाम शाह को सौंप दिया। गद्दी पर बैठने के बाद शाहजहां ने खान जहां लोदी को बालघाट वापस लेने का आदेश दिया, पर उसे सफलता न मिलने पर शाहजहां ने उसे दरबार में बुलाया। खान जहां दक्खन भाग गया और उसने निजाम शाह की शरण ले ली। उसकी बगावत, निजाम शाह द्वारा उसे शरण देना, तथा बालघाट के नुक्सान के कारण शाहजहां ने दक्खन राज्यों के प्रति आक्रामक नीति अपनायी। इसी समय निजाम शाही पेशवा हमीद खां की पत्नी ने बुरहान तृतीय को उसके भाई फतह खान को छोड़ देने का सुझाव दिया। राजा ने उसे छोड़ दिया पर थोड़े समय बाद उसे मार दिया और 1632 में उसके बेटे हुसैन को गद्दी

पर बैठा दिया और तब शाहजहां के नाम का खुतबा पढ़ा और सिक्कों पर उसका नाम खुदवाया। शाहजहां ने खान जहां लोदी की बगावत को दबा दिया, बालघाट और बरार पर पुनः कब्जा जमा लिया, दक्खन पर मुगल आधिपत्य स्थापित कर लिया और फिर उत्तर की ओर लौट आया। बीजापुर के सरदार रंदौला खां के समझाने-बुझाने पर फतह खां मुगलों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए तैयार हो गया। इसके परिणामस्वरूप 1633 में महावत खां ने निजाम शाही शासकों से दौलतावाद का किला छीन लिया। उसने फतह खां और हुसैन निजाम शाह को कैद कर लिया। निजाम शाह को ग्वालियर किले में कैद कर लिया गया और फतह खां को जागीर प्रदान की गयी।

एक निजामशाही सरदार शाह जी भौंसले राज्य की रक्षा के लिए आगे आया। उसने कई किलों पर कब्जा जमाया और शाही परिवार के एक युवराज को मुरतजा निजाम शाह तृतीय की उपाधि के साथ गद्दी पर बैठा दिया। उसकी इन गतिविधियों के कारण शाहजहां को 1630 में दक्खन आना पड़ा और युद्ध का एक नया दौर शुरू हुआ। शाहजी पराजित हुए और मुगलों ने कई किले जीत लिए। इसके बाद उन्होंने बीजापुर के कई इलाकों को तहस-नहस कर दिया और काफी क्षेत्र पर कब्जा जमा लिया। मुहम्मद आदिल शाह ने संधि की प्रार्थना की। 1636 में एक संधि हुई जिसके अनुसार निजामशाही राज्य का अस्तित्व समाप्त कर दिया गया। इसे मुगलों और बीजापुर के बीच बांट दिया गया। भीम नदी के उत्तर का इलाका मुगलों के अधीन रहा और दक्षिण का इलाका आदिल शाह के कब्जे में रहा। संक्षेप में संधि की शर्तें इस प्रकार थीं:

1) निजामशाही राज्य बीजापुर और मुगल साम्राज्य के बीच विभक्त कर दिया गया। बीजापुर को पूरा कोंकण, धाकन, और सिना के उस पार के परेंदा और शोलापुर के परगने, भीम और सिना के बीच वेंगी जिला और कल्याणी के उत्तर-पूर्व मनजीरा नदी के किनारे भाल्की जिला प्राप्त हुआ।
2) आदिल शाह को उदगिर और आउसा किले पर अपनी दावेदारी छोड़नी थी और निजामशाही के अधिकारियों से किला छीनने में किए गये मुगल प्रयासों में कोई बाधा नहीं डालनी थी।
3) कोई भी दल इस संधि द्वारा निर्धारित सीमा का उल्लंघन नहीं करेगा।
4) आदिल शाह को मुगल सम्राट को बतौर नजराना बीस लाख रुपये देने थे
5) आदिल शाह को कुतुबशाह के साथ अच्छा संबंध बनाए रखना था, क्योंकि कुतुबशाह ने प्रतिवर्ष मुगलों को 2 लाख रुपये बतौर नजराना देना कबूल किया था तथा उसने मुगल सम्राट का मातहत बनना स्वीकार किया था।
6) दोनों दल न तो एक-दूसरे के अधिकारियों और सैनिकों को घूस देंगे न उन्हें नौकरी या शरण देंगे।
7) अगर शिवाजी भोंसले आदिल खां की नौकरी करना चाहे तो उसे मुगल अधिकारियों को जुन्नार, त्रिम्बक और प्रेमगढ़ के किले सौंपने होंगे।

इस प्रकार बीजापुर मुगल साम्राज्य का एक अधीनस्थ दोस्त बन गया, हालांकि इसकी स्वतंत्रता कायम रही। बीजापुर के शासक ने 1636 की संधि शर्तों को ध्यान में रखते हुए दक्षिण में अपने क्षेत्र का विस्तार किया। लेकिन डच रिकार्ड के अनुसार शाहजहां के निर्देश पर आदिलशाह और कुतुबशाह ने कर्नाटक पर कब्जा जमाया था।

1936 की संधि ने मुगल-बीजापुर संबंधों को बिल्कुल उलट दिया। 1636 तक मुगल आदिलशाही शासकों को अपने पक्ष में करने की कोशिश कर रहे थे क्योंकि दक्खनी राज्यों में यह सबसे मजबूत था। मुगलों ने हमेशा अन्य दक्खनी राज्यों से बीजापुर का गठबंधन न होने देने का प्रयास किया ताकि मुगलों के खिलाफ वे शक्तिशाली न बन जाएं और इस प्रकार एक के बाद एक दक्खनी राज्यों पर कब्जा जमाते चले गये। अहमदनगर राज्य के अस्तित्व की समाप्ति के बाद मुगल बीजापुर की सीमा तक पहुंच गये और इससे बीजापुर पर मुगल आधिपत्य स्थापित होने का मार्ग प्रशस्त हो गया।

बीस वर्षों (1636-56) तक मुगल-बीजापुर संबंध सौहार्दपूर्ण और शांतिपूर्ण बने रहे। केवल दो अवसरों पर सम्राट आदिलशाह से अप्रसन्न हुए। 1642-43 में आदिलशाह ने अपने सरदार मुस्तफा खां को गिरफ्तार कर लिया जो मुगलों का हमदर्द था। शाहजहां के हस्तक्षेप के बाद आदिलशाह ने उसे पुनः पद पर प्रतिष्ठित किया। आदिलशाह ने कुछ दुःसाहसपूर्ण तौर-तरीके अपना रखे थे। शाहजहां इस प्रकार की धृष्टता को पसंद नहीं करता था अतः उसने इन तरीकों को बंद करने का आदेश दिया। वह लगातार मुगल सम्राट को पेशकश (नजराना) भेजता रहा। 1648 में शाहजहां ने मुहम्मद अली शाह को "शाह" की उपाधि से सम्मानित किया।

1656 में आदिल शाह की मृत्यु हो गयी और इसके बाद बीजापुर के प्रति मुगल दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण बदलाव आया। युवराज औरंगजेब ने इस मौके का फायदा उठाकर बीजापुर पर आक्रमण करने का मन बना लिया। उसने सम्राट को पत्र लिखा कि मुहम्मद आदिल शाह का उत्तराधिकारी अली आदिलशाह द्वितीय उसका अपना पुत्र नहीं है बल्कि उसे गोद लिया गया है। औरंगजेब ने बीजापुर के कई सरदारों को भी अपने पक्ष में कर लिया था। यह भी माना जाता है कि मुगल साम्राज्य की आर्थिक स्थिति के कारण भी शाहजहां ने अपनी दक्खनी नीति में परिवर्तन किया। शाहजहां ने औरंगजेब को आदेश दिया कि अगर संभव हो तो पूरे बीजापुर पर कब्जा जमा लो, अगर यह न हो सके तो पुराने अहमदनगर राज्य के उस हिस्से पर कब्जा जमा लो जो 1636 की संधि के अनुरूप बीजापुर के पास था और युद्ध का हरजाना देने तथा मुगल संप्रभुता स्वीकार कर लेने की शर्त पर राज्य को छोड़ दो। इस प्रकार शाहजहां ने 1636 की संधि तोड़ डाली। सम्राट को बीजापुर के उत्तराधिकार के प्रश्न पर हस्तक्षेप करने या उस पर मुहर लगाने का कोई कानूनी अधिकार नहीं प्राप्त था। औरंगजेब ने बीदर और कल्याणी पर भी कब्जा जमा लिया। बीजापुर तक का रास्ता बिल्कुल साफ था। पर दारा शिकोह की सलाह पर शाहजहां ने औरंगजेब को यह अभियान बंद करने की सलाह दी। बीजापुर का शासक बीदर, कल्याणी और युद्ध के हरजाने के तौर पर एक करोड़ रुपये देने को राजी हो गया। लेकिन इस समय मुगलों की कमजोरी को महसूस करते हुए आदिलशाह ने राशि अदा नहीं की।

शाहजहां के गद्दी पर बैठने के पहले तक गोलकुंडा के साथ मुगल साम्राज्य का संबंध केवल राजनयिक आदान-प्रदान तक सीमित था। वह मुगलों के खिलाफ निजामशाही और आदिलशाही राज्यों तथा मराठों को सैनिक और वित्तीय सहायता दिया करता था। आपने आदिलशाह के साथ 1636 की मुगल संधि का अध्ययन ऊपर किया है। इसी वर्ष अब्दुला कुतुबशाह ने अधीनता और शिष्टाचार के संधि-पत्र पर हस्ताक्षर किए। इसकी प्रमुख शर्तें इस प्रकार थी :

1) शुक्रवार की नमाज में बारह इमामों के स्थान पर चार खलीफाओं का तथा ईरानी शासक के स्थान पर मुगल सम्राट का नाम लिया जाएगा।
2) मुगल सम्राट के नाम से सिक्के ढाले जाएंगे।
3) शाहजहां के नौवें शासकीय वर्ष से प्रतिवर्ष 2 लाख **हून** सम्राट को भेजे जाएंगे।
4) सम्राट के दोस्त और दुश्मन अब्दुल्ला के दोस्त और दुश्मन होंगे।
5) अगर आदिल खां गोलकुंडा पर चढ़ाई करने की कोशिश करता है, तो अब्दुल्ला उसे भगाने में सम्राट की सहायता लेगा, लेकिन अगर दक्खन का मुगल राजाध्यक्ष उसकी याचिका को अग्रसारित करने से इन्कार करता है और उसे आदिलशाह को हरजाना देने को बाध्य होना पड़ता है तो इस राशि को मुगल सम्राट को दिए जाने वाले पेशकश से घटा दिया जाएगा।

इस संधि ने कुतुबशाह को मुगल सम्राट का अधीनस्थ बना दिया। इस संधि के बाद अब्दुल्ला कुतुबशाह मुगलों की तरफ से निश्चिंत हो गया और कर्नाटक के बड़े हिस्से पर कब्जा जमा लिया। अब्दुल्ला ने अपने सरदार मुहम्मद सैयद मीर जुमला को कर्नाटक पर कब्जा जमाने का आदेश दिया। इन अभियानों के दौरान मीर जुमला के पास अच्छी-खासी रकम इकट्ठी हो गयी। उसने हीरों का व्यापार शुरू कर दिया, जिससे उसे काफी आमदनी हुई। शाही सेना के अतिरिक्त वह अपनी निजी सेना भी रखता था। वह गांडिकोटा से इस क्षेत्र में एक सम्राट के रूप में शासन करता था। इस प्रकार उसे और उसके परिवार के सदस्यों को काफी घमंड हो गया। यहां तक कि उसका बेटा मुहम्मद अमीन नशे की हालत में महल में घुस गया और कालीन पर उल्टी कर दी। अब्दुल्ला ने मीर जुमला को दरबार में आने का आदेश दिया पर इसके बजाय वह युवराज औरंगजेब से पत्र-व्यवहार करता रहा। अब्दुल्ला ने अमीन को कोविलकोंडा किले में बंदी बना लिया और उसकी संपत्ति जब्त कर ली। जल्द ही शाहजहां ने मीर जुमला को 5000 **ज़ात** और उसके पुत्र को 2000 **ज़ात** का ओहदा प्रदान किया।

1656 में शाहजहां ने **पेशकश** (नजराना) की बकाया राशि और गोलकुंडा **हून** और मुगल रुपया के आदान-प्रदान को लेकर अब्दुल्ला से झगड़ा करना शुरू कर दिया। 1936 की संधि के समय एक गोलकुंडा **हून** चार मुगल रुपए के बराबर था। अब 1656 में यह पांच रुपए के बराबर हो गया। शाहजहां ने नये दर पर बकाया राशि की अदायगी के लिए दबाव डालना शुरू किया जबकि कुतुबशाह पुराने दर पर अड़ा रहा। शाहजहां ने उदंड मीर जुमला को भी अपने पक्ष में मिला लिया।

मुगलों और अब्दुल्ला का संबंध इस हद तक तनावपुर्ण हो गया कि मुगलों ने गोलकुंडा किले पर घेराबंदी डाल दी। पर कुछ समय बाद युवराज दारा की सलाह पर सम्राट ने औरंगजेब को घेरा उठा लेने का आदेश दिया। औरंगजेब और अब्दुल्ला के बीच हड़बड़ी में एक संधि हुई जिसके अनुसार अन्य शर्तों के अलावा रामगीर पर मुगलों का आधिपत्य हो गया।

हालांकि इस प्रश्न का कोई निश्चित उत्तर नहीं है, फिर भी कुछ इतिहासकारों का मानना है कि साम्राज्य के वित्तीय संकट, जागीर व्यवस्था के संकट और कोरोमंडल तट के वाणिज्य पर मुगलों का नियंत्रण स्थापित करने के ध्येय के कारण शाहजहां ने 1636 की संधि को तोड़ा और 1656-57 में गोलकुंडा और बीजापुर में हस्तक्षेप किया। कुछ भी कारण हो, इतना स्पष्ट है कि 1656-57 में मुगल नीति में बदलाव के कारण मुगल साम्राज्य को कोई साकारात्मक फायदा नहीं हुआ। इसके बदले दक्खनी राज्य मुगल साम्राज्य को शक की निगाह से देखने लगे। दक्खन की समस्याओं को सुलझाने के बजाय, शाहजहां की नीति से दक्खन की स्थिति अंततः काफी उलझ गयी।

बोध प्रश्न 2

1) दस पंक्तियों में जहांगीर की दक्खन नीति का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) शाहजहां और निजामशाही राज्य के बीच हुई 1636 की संधि की 5 प्रमुख शर्तों का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

9.5 औरंगजेब और दक्खनी राज्य

औरंगजेब दक्खन राज्यों पर प्रत्यक्ष नियंत्रण का समर्थक था। सिंहासन हासिल करने के बाद उसे दक्खन में बड़ी जटिल परिस्थिति का सामना करना पड़ा। मराठों की बढ़ती शक्ति और मुगलों के प्रति संदेहपुर्ण दृष्टि ने दक्खन में औरंगजेब की आक्रामक नीति को काफी संयमित कर दिया। औरंगजेब का सबसे पहला काम बीजापुर और गोलकुंडा को 1657 की संधि से बांधे रखना तथा संधि के तहत प्राप्त इलाकों पर आधिपत्य जमाना था। पर मुगल सरदार जय सिंह मराठों की सहायता लेकर दक्खन में एक आक्रामक नीति अपनाना चाहता था। इस क्रम में उसने शिवाजी के साथ पुरन्दर की संधि (1664) की। इसके बाद जयसिंह ने बीजापुर पर कब्जा जमाने के दो असफल प्रयत्न किए। 1672 में आदिलशाह की मृत्यु, एक बच्चे सिकंदर आदिलशाह का गद्दी पर बैठने और बीजापुर दरबार के षडयंत्र का लाभ उठाकर औरंगजेब ने बीजापुर में हस्तक्षेप किया। औरंगजेब ने एक बहादुर सेनानायक बहादुर खां को दक्खन का राज्याध्यक्ष नियुक्त किया। बहादुर खां ने बीजापुर के सरदारों को अपने पक्ष में मिलाना शुरू कर दिया। ख्वास खां उन सरदारों में से था जो मुगल-बीजापुर गठबंधन का उपयोग शिवाजी के खिलाफ करना चाहते थे। लेकिन इसे कार्यान्वित होने से पहले ही वह पदच्युत कर दिया गया। अपने इस प्रयास में असफल होकर मुगल 1676 में बीजापुर में दक्खनी दल को अफगानी सरदार बहलोल खां के खिलाफ भड़काने लगे। पर बहलोल खां बहादुर को लगातार पराजित करता रहा। इसके बाद बहादुर खां ने एक बृहद् सेना का निर्माण शुरू किया जिससे बहलोल घबड़ा गया। बहलोल खां ने बहादुर खां के साथ संधि कर ली और 1677 में मुगलों द्वारा नालदुर्ग और गुलबर्गा पर कब्जा जमाए जाने पर चुपचाप बैठा रहा। इसके बाद उसने मुगल सेनानायक दिलेर खां से संधि कर ली और बहादुर खां के खिलाफ औरंगजेब को पत्र लिखा कि वह दक्खन में मुगल हित में बाधक बन रहा है। औरंगजेब ने बहादुर खां को वापस बुला लिया और दिलेर खां को दक्खन के सूबेदर के रूप में काम करने का आदेश दिया।

बीजापुर के प्रतिशासक (रीजेन्ट) सिद्दी मसूद ने गुलबर्गा में मुगलों के साथ एक समझौता किया। इन शर्तों के अनुसार (1) सिद्दी मसूद को बीजापुर का वजीर बनाया गया, पर उसे औरंगजेब के आदेशों का पालन करना था। (2) उसे शिवाजी से कोई संधि नहीं करनी थी और उसके खिलाफ मुगलों को मदद करनी थी। (3) आदिलशाह की बहन की शादी औरंगजेब के एक लड़के से होनी थी, पर बीजापुर लौटने के बाद सिद्दी मसूद ने समझौते की किसी भी शर्त का पालन नहीं किया। उसने शिवाजी से दोस्ती करनी चाही। दिलेर खां ने सिद्दी मसूद से संधि की शर्तें मनवाने का प्रयत्न किया पर वह असफल रहा। औरंगजेब ने बीजापुर पर आक्रमण करने का आदेश दिया क्योंकि बहलोल खां मर चुका था. अफगान सैनिक बिखर गये थे और बीजापुर दरबार विभिन्न धड़ों के आपसी संघर्ष का अखाड़ा बन गया था। दिलेर खां ने बीजापुर के सामंतों को घूस दिया, उन्हें अपने पक्ष में मिलाया और मुगलों के मातहत काम करने वाले बीजापुरी सैनिकों का एक दल निर्मित किया। पर मसूद दोहरी राजनीति खेलता रहा। एक तरफ वह मुगलों के खिलाफ शिवाजी के साथ संधि करता रहा और दूसरी तरफ दिलेर खां से शिवाजी के खिलाफ संबंध जोड़ता रहा। एक मुगल सैनिक दस्ते को बीजापुर में आमंत्रित किया गया, उनका शाही स्वागत किया गया और फिर उन्हें बीजापुर की फौज के साथ मराठों के खिलाफ अभियान में भेज दिया गया। इसी समय दिलेर खां ने शिवाजी के कई ठिकानों पर कब्जा कर लिया और कई ठिकानों को बरबाद कर दिया। सिद्दी मसूद की स्थिति काफी कमजोर हो गयी क्योंकि उसके अधिकांश सिपाही दिलेर खां के दल में शामिल हो गये। अतः 1679 में आदिलशाह की बहन को युवराज आजम के साथ शादी करने के लिए मुगल दरबार में भेजा गया। दक्खन के मुगल राज्याध्यक्ष शाह आलम और दिलेर खां की दुश्मनी के कारण शाह आलम को 1680 के आरंभ में बीजापुर के साथ संधि करनी पड़ी। बीजापुर में औरंगजेब के नाम का खुतबा पढ़ा गया और उसके नाम का सिक्का ढाला गया।

दक्खन के राजदूत के रूप में यह शाह आलम की सबसे बड़ी सफलता थी। शाहजहां और औरंगजेब जिस लक्ष्य को सैनिक कुशलता से हासिल न कर सके उस लक्ष्य को उसने शांतिपूर्वक कूटनीतिक सफलता से पा लिया। उसने बीजापुर पर मुगल आधिपत्य स्थापित कर दिया। आदिलशाह कमजोर था अतः उसने मुगल आधिपत्य स्वीकार कर लिया। दरबारी गुटबंदी के कारण उसका प्रशासन कमजोर था और उसके सरदार उसका साथ छोड़कर मुगलों के साथ मिल गये थे।

मुगलों और बीजापुर का यह मधुर संबंध सम्भाजी को लेकर समाप्त हो गया। मुगल सम्भाजी के खिलाफ बीजापुर की मदद चाहते थे जबकि बीजापुर अंदर ही अंदर मराठों को सहयता पहुंचा रहा था। 1682-83 के दौरान मुगलों ने बीजापुर के इलाकों को रौंद डाला और बीजापुर पर भी कब्जा जमाने की कोशिश की, पर वे असफल रहे। 1684 में औरंगजेब ने आदिलशाह के समक्ष निम्नलिखित मांगें रखीं :

(i) मुगल सेना को खाने-पीने का सामान प्रदान करना, (ii) सम्भाजी के खिलाफ बढ़ती सेना का मार्ग प्रशस्त करना, (iii) मराठों के विरुद्ध मुगल अभियान के लिए पांच से छः हजार घुड़सवार देना, (iv) सम्भाजी के साथ कोई संबंध नहीं रखना, और (v) शारज़ा खां नामक सरदार को बीजापुर से निकाल बाहर करना।

इन मांगों को पूरा करने की बात तो दूर रही, आदिल शाह ने अपनी तरफ से मांगें रख दीं : (i) दिलेर खां द्वारा ली गयी रकम को लौटाना, (ii) मुगलों द्वारा शारज़ा खां की जागीर पर दखल छोड़ना, और (iii) मुगलों द्वारा बीजापुर के क्षेत्र पर किए कब्जे को छोड़ना।

उसने शारज़ा खां को इस तर्क पर बाहर निकालना नामंजूर कर दिया कि अगर उसे निकाला गया तो वह मराठों से जाकर मिल जाएगा। इस परिस्थिति में मुगलों और बीजापुर के बीच की खाई चौड़ी हो गयी। सम्राट के आदेश पर मुगलों ने 1685 में बीजापुर के खिलाफ अभियान शुरू कर दिया और 1686 में सिकंदर आलिशाह ने आत्मसमर्पण कर दिया। उसे बंदी बना लिया गया और बीजापुर राज्य मुगल साम्राज्य का एक अंश बन गया।

औरंगजेब गोलकुंडा की गतिविधियों खासकर मदन्ना और अकन्ना की भूमिका से प्रसन्न नहीं था, जिन्होंने मुगलों के खिलाफ मराठों से हाथ मिला लिया था। वह जानता था कि अब्दुल्ला कुतुब शाह शिवाजी के पुत्र सम्भाजी की वित्तीय सहायता कर रहा है। 1685 में मुगल आक्रमण के दौरान उसने सिकन्दर आदिल शाह को बड़ी सैन्य मदद देने का वादा किया था। यह बात सम्राट को मालूम थी। उसने युवराज मुअज्जम को कुतुबशाही क्षेत्र पर आक्रमण करने का आदेश दिया।

1686 में मलखेर के द्वितीय युद्ध में कुतुबशाही सेना ध्वस्त हो गई। इसके परिणामस्वरूप कई कुतुबशाही सरदार मुगल सेना में मिल गये जिसके कारण अब्दुल्ला को हैदराबाद छोड़ना पड़ा और उसने अपने आप को गोलकुंडा किले में बंद कर लिया। 1687 में सम्राट ने गोलकुंडा किले के काफी नजदीक पहुंचकर उस पर घेरा डाल दिया। आठ महीने की घेराबंदी के बाद अब्दुल्ला ने मुगलों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। उसे दौलताबाद किले में कैद कर दिया गया और गोलकुंडा मुगल साम्राज्य का अंग बन गया।

9.6 मुगलों की दक्खनी नीति का मूल्यांकन

ऊपर किए गये सर्वेक्षण से यह स्पष्ट है कि मुगलों की दक्खनी नीति में मुगलों की व्यक्तिगत आकांक्षा या धार्मिक तत्व की कोई भूमिका नहीं थी। हमने आरंभिक भागों में देखा कि अकबर के समय से ही मुगलों और दक्खनी राज्यों के संबंधों में बदलाव आते रहे। इन बदलावों को मुगल साम्राज्य के सामाजिक-आर्थिक और प्रशासनिक परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य में देखना उपयुक्त होगा। अकबर का मुख्य उद्देश्य दक्खन में मुगल सत्ता की स्थापना और "सूरत भीतरी प्रदेश" की रक्षा करना था। वह जानता था कि केवल सैनिक अभियान की सहायता से इस उद्देश्य की पूर्ति नहीं की जा सकती है। अतः उसने कूटनीतिक चालों का भी सहारा लिया।

जहांगीर चाहता था कि 1600 की संधि के तहत अकबर ने मुगल साम्राज्य का आधिपत्य दक्खन में जहां तक स्थापित किया था, वह बना रहे। दक्खन की स्थिति को भांपते हुए और साम्राज्य की अंदरूनी समस्याओं को देखते हुए उसने यथास्थिति की यह नीति अपनाई। अहमदनगर द्वारा 1600 ई. की संधि का उल्लंघन किए जाने पर शाहजहां ने अहमदनगर के खिलाफ आक्रामक रुख अपनाया और 1636 ई. की संधि लागू कर दक्खनी समस्या को अगले 20 वर्षों तक के लिए सुलझा दिया। एक बार फिर कर्नाटक प्रदेश में बीजापुर और गोलकुंडा के बढ़ते प्रभाव और साम्राज्य के वित्तीय संकट के कारण शाहजहां को अपनी नीति बदलनी पड़ी। यहां तक कि औरंगजेब, जो अपने राज्यारोहण के पूर्व दक्खन में आक्रामक नीति का पक्षधर था, भी बीजापुर और गोलकुंडा पर एकदम कब्जा जमाने के पक्ष में नहीं था। मराठों की बढ़ती शक्ति, मराठों और बीजापुर-गोलकुंडा के आपसी गठबंधन के खतरे और साम्राज्य के आंतरिक संकट ने औरंगजेब को 1680 के दशक में बीजापुर और गोलकुंडा पर कब्जा करने को बाध्य किया। इन सब बातों से यह स्पष्ट होता है कि मुगलों की दक्खनी नीति मुगल शासकों की व्यक्तिगत इच्छा की अपेक्षा समकालीन परिस्थिति से पनपी जरूरतों से निर्देशित हुई।

कुछ इतिहासकार मुगलों की दक्खन नीति की यह कहकर आलोचना करते हैं कि इसे गलत ढंग से संचालित किया गया और इसका परिणाम मुगल साम्राज्य को अंततः भोगना पड़ा। इस प्रकार की टिप्पणी ऐतिहासिक तौर पर गलत है।

दक्खन में मराठों के बढ़ते प्रभाव और दक्खनी राज्यों के आपसी झगड़े को देखते हुए यह कहना पड़ता है कि दक्खन में मुगलों का हस्तक्षेप अवश्यंभावी था। अगर हम मुगलों की दक्खनी नीति के विभिन्न चरणों को ध्यान से देखें तो पाएंगे कि मुगल दक्खनी राज्यों की तरफ एक कदम रखने से पहले समकालीन परिस्थितियों को भांप लिया करते थे। जैसा हमने देखा उनकी दक्खनी नीति को प्रभावित करने वाले कई कारक क्रियाशील थे। दक्खन में उन्हें कभी-कभी असफलताओं का सामना करना पड़ा। इसका कारण केवल यह नहीं था कि उन्हें दक्खनी समस्या का ज्ञान नहीं था। इन असफलताओं का एक और प्रमुख कारण मुगल सरदारों का आपसी संघर्ष और उनकी ढुलमुल स्वामी भक्ति थी। इस कारण भी मुगलों को दक्खन में कई बार असफलताओं का सामना करना पड़ा। अतः मुगलों की दक्खनी नीति पर विचार करते समय किसी एक तत्व पर अपने को सीमित कर लेना सही नहीं है बल्कि इसके लिए खुले और व्यापक दृष्टिकोण को अपनाना संगत होगा।

बोध प्रश्न 3

1) औरंगजेब ने अंततः गोलकुंडा और बीजापुर पर कब्जा क्यों जमा लिया?

....

....

....

....

....

2) दक्खनी राज्यों के प्रति मुगलों के नीति-निर्धारण में प्रमुखता किस बात की रही?

....

....

....

....

....

9.7 सारांश

हम आशा करते हैं कि इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान गए होंगे कि मुगलों की दक्खनी नीति को रूपायित करने में अनेक कारक क्रियाशील थे। मुगल शासकों में सबसे पहले अकबर ने दक्खनी राज्यों पर मुगल आधिपत्य स्थापित करने की कोशिश की। अकबर खानदेश, बरार और अहमदनगर के कुछ हिस्सों पर कब्जा जमाकर संतुष्ट था। जहांगीर के शासनकाल में मुगल साम्राज्य के दक्खनी इलाकों में कोई वृद्धि नहीं हुई। शाहजहां ने 1636 ई. में बीजापुर के साथ मिलकर अहमदनगर को आपस में बांट लिया और 1656-57 तक दक्खन में उसने आक्रामक नीति नहीं अपनाई। आरंभ में औरंगजेब बीजापुर और गोलकुंडा पर कब्जा जमाना नहीं चाहता था, पर अंततः ये दोनों राज्य मुगल साम्राज्य में मिला लिए गए। इसके बावजूद दक्खन समस्या समाप्त नहीं हुई, बल्कि 17वीं शताब्दी के अंत और 18वीं शताब्दी के आरंभ में यह समस्या तेजी से उभरी और मराठों ने साम्राज्य को गंभीर चुनौती दी। दक्खन की पूरी स्थिति को अच्छे ढंग से समझने के लिए हम इकाई 10 में मराठों के बारे में विचार-विमर्श करेंगे।

9.8 शब्दावली

हून : दक्खनी सोने का सिक्का जिसे पगोडा भी कहा जाता था। नया पगोडा = 3-1/2 मुगल रुपया; पुराना पगोडा = 4-5 मुगल रुपया

जागीर : नगद वेतन के स्थान पर दिया जाने वाला भू-क्षेत्र जिसके राजस्व का उपभोग प्राप्तकर्ता करता था। (विवरण के लिए देखिए इकाई 15)

कोस : 2 मील, 4 फर्लांग और 158 गज के बराबर

खुतबा : शुक्रवार की नमाज के वक्त शासक के नाम पढ़ा जाने वाला प्रवचन

पेशवा : प्रधानमंत्री

सवार : एक मुगल पद जिसके द्वारा यह तय होता था कि एक मुगल मनसबदार/सरदार को कितने घोड़े और घुड़सवार रखने हैं

ज़ात : एक मुगल पद जिसके द्वारा यह तय होता था कि एक मुगल मनसबदार का पदानुक्रम में क्या स्थान है और इससे उसका व्यक्तिगत वेतन भी निर्धारित होता था।

9.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) (i) √ (ii) √ (iii) × (iv) ×
2) उत्तर के लिए भाग 9.2 पढ़िए।

बोध प्रश्न 2

1) जहाँगीर भी राज्य विस्तार में विश्वास रखता था परन्तु कुछ कठिनाइयों के कारण वह दक्खन में अधिक विस्तार नहीं कर पाया। (देखें भाग 9.3)
2) भाग 9.4 देखिए।

बोध प्रश्न 3

1) अपने उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल कर सकते हैं :
   मराठों का बीजापुर के शासक का समर्थन, मुगल मांगों को पूरा करने में बीजापुर का शासक असमर्थ, गोलकुंडा की गतिविधियां आदि।
2) इस प्रश्न का उत्तर देते समय अपने तर्कों का इस्तेमाल कीजिए। (देखिए भाग 9.6)